

SHRI. P.PARAMESWARAN

Profound thinker, erudite writer, accomplished orator and enterprising intellectual, Shri P. Parameswaran is Director of Bharatheeya Vichara Kendram, Thiruvananthapuram, which focuses on studies and research in national reconstruction. He is also President of Vivekananda Kendra, Kanyakumari. Shri Parameswaran is widely acknowledged in India and abroad as an authority on Swami Vivekananda and Sri Aurbindo.

2. Born on September 18, 1927, at Chaaramangalam near Cherthala in Aalappuzha District of Kerala, Shri Parameswaran graduated from University College, Thiruvananthapuram with distinction in BA (Hons.) in History. Earlier he was inspired by Swami Aagamananda of Sri Ramakrishna order. In his later life, his thoughts and vision were moulded by nationalist savants such as Shri Guruji Golwalkar and Pandit Deendayal Upadhyaya. Shri Parameswaran entered the realm of social work in 1950 as a Pracharak of Rashtreeya Swayamsevak Sangh and thus dedicated his entire life for the service of the nation. He became Organising Secretary of Bharatheeya Jan Sangh in Kerala in 1957 and in 1968 assumed the post of All India Secretary and later Vice President of Jan Sangh. From 1975 till 77 he was imprisoned during emergency for participating in national agitations.

3. Shri Parameswaran became the Director of the Deendayal Research Institute-New Delhi in 1977 which was dedicated to social science research and rural reconstruction programmes. On October 27, 1982, he established the Bharatheeya Vichara Kendram at Thiruvananthapuram. Shri Parameswaran marshalled an intellectual movement in Kerala highlighting a national vision and emphasizing our traditional knowledge systems in accordance with historical changes. He monitored social, economic and political issues that influenced India's unity and integrity, and offered policy alternatives. He organised discussions, symposia, national seminars and international conferences on topics such as global studies, national security, political and legal studies, environmental issues, terrorism, higher education, science, technology and spiritualism.

4. Shri Parameswaran was former editor of Manthan, bulletin of Deendayal Research Institute, New Delhi. Currently he is editor of Vivekananda Kendra Patrika of Vivekananda Kendra and Pragati, research journal of Bharatheeya Vichara Kendram. He has published three dozen books and hundreds of articles on humanities, social sciences and Indian heritage. His seminal work is Marx and Vivekananda. His select articles in English have been published in three volumes in 2017 in association with his Navati celebrations. His complete works are under compilation. The contribution of Shri Parameswaran in popularising Swadeshi Science Movement is also noteworthy.

5. Shri Parameswaran presented Swami Vivekananda's perspectives on nationalism, science, philosophy and spiritualism to inspire and empower the youth and students at various universities and institutions. His scholarship was duly acknowledged abroad and was invited to the centenary celebrations of Swami Vivekananda's Chicago Address in 1993 at New York, Chicago and London. He was also appointed Member of the Court of Jawaharlal Nehru University, New Delhi in 2000.

6. Shri Parameswaran is the recipient of numerous awards and honours. He was presented the Hanuman Prasad Poddar award at Kolkata in 1997 and Amrita Keerti Puraskar in 2002 by Mata Amritanandamayi Math. In 2004, he was honoured with Padma shri by the President of India. Hindu Renaissance Award, "Hindu of the Year 2010" was also awarded to him.



श्री पि. परमेश्वरन

गहन विचारक, बहुश्रुत लेखक, निपुण वक्ता तथा उत्साही बुद्धिजीवी, श्री पि. परमेश्वरन भारतीय विचार केन्द्रम, तिरुवनंतपुरम के निदेशक हैं, जो राष्ट्रीय पुनर्निर्माण में, अध्ययनों और शोध पर केन्द्रित रहता है। आप विवेकानंद केन्द्र, कन्याकुमारी के भी अध्यक्ष हैं1 आपको स्वामी विवेकानंद और श्री अरबिन्दो के संबंध में भारत तथा विदेशों में व्यापक रूप से एक अथॉरिटी के रूप में माना जाता है।

2. आपका जन्म 18 सितम्बर, 1927 को केरल के अल्पुजा जिले में चेरथला के समीप चारमंगलम में हुआ था। आपने इतिहास विषय में विशेष योग्यता के साथ यूनिवर्सिटी कॉलेज, तिरुवनंतपुरम से बी ए (ऑनर्स) की उपाधि प्राप्त की। पूर्व में आप श्री रामकृष्ण संघ के स्वामी अगमानंद से प्रेरित हुए। इसके बाद के जीवनकाल में आपके विचारों और दृष्टिकोण को राष्ट्रवादी सावंतों जैसे श्री गुरु जी गोलवलकर और पंडित दीनदयाल उपाध्याय द्वारा गढ़ा गया। वर्ष 1950 में, आपने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के एक प्रचारक के रूप में सामाजिक कार्य क्षेत्र में प्रवेश किया और इस प्रकार से आपने अपना पूरा जीवन राष्ट्र की सेवा में समर्पित कर दिया। आप 1957 में केरल में भारतीय जन संघ के संगठन सचिव बने और 1968 में जनसंघ के अखिल भारतीय सचिव तथा इसके बाद उपाध्यक्ष का पदभार संभाला। वर्ष 1975 से 1977 तक, आपातकाल के दौरान राष्ट्रीय विरोध प्रदर्शनों में भाग लेने के कारण जेल में बंद रहे।

3. आप 1977 में दीनदयाल शोध संस्थान, नई दिल्ली के निदेशक बने, जो सामाजिक विकास के शोध और ग्रामीण पुनर्निर्माण कार्यक्रमों के लिए समर्पित था। 27 अक्तूबर, 1982 को आपने तिरुवनंतपुरम में भारतीय विचार केन्द्रम की स्थापना की। आपने नेशनल विजन को रेखांकित करते हुए ऐतिहासिक बदलावों के अनुरूप हमारी परंपरागत ज्ञान प्रणालियों पर जोर देते हुए केरल में एक बौद्धिक आंदोलन की व्यवस्था संभाली। आपने सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक मुद्दों को मॉनीटर किया, जिन्होंने भारत की एकता एवं अखंडता को प्रभावित किया तथा नीतिगत विकल्प प्रस्तुत किए। आपने वैश्विक अध्ययनों, राष्ट्रीय सुरक्षा, राजनीतिक एवं विधिक अध्ययनों, पर्यावरणीय मुद्दों, आतंकवाद, उच्च शिक्षा, विज्ञान, प्रौद्योगिकी और अध्यात्म जैसे विषयों पर विचार-विमर्श, विचार गोष्ठियों, राष्ट्रीय सेमिनारों तथा अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों का आयोजन किया।

4. आप दीनदयाल अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली के बुलेटिन "मंथन" के पूर्व संपादक रहे। वर्तमान में आप विवेकानंद केन्द्र की विवेकानंद पत्रिका और भारतीय विचार केन्द्रम की शोध पत्रिका 'प्रगति' के सम्पादक हैं। आपने तीन दर्जन पुस्तकें प्रकाशित की हैं और मानविकी, सामाजिक विज्ञान तथा भारतीय विरासत पर सैकड़ों लेख लिखे हैं। आपका मौलिक कार्य है-मार्क्स और विवेकानंद। आपके अंग्रेजी में चुनिंदा लेख वर्ष 2017 में, आपके नवाती समारोहों के संयोजन में तीन खंडों में प्रकाशित किए गए हैं। आपका संपूर्ण कृतित्व संकलन आधीन है। आपका स्वदेशी विज्ञान आंदोलन को लोकप्रिय बनाने संबंधी योगदान भी उल्लेखनीय है।

5. आपने विभिन्न विश्वविद्यालयों और संस्थानों में युवाओं और विद्यार्थियों को प्रेरित करने और उन्हें सशक्त बनाने हेतु राष्ट्रीयता, विज्ञान, दर्शन और अध्यात्म पर स्वामी विवेकानंद के परिदृश्यों को प्रस्तुत किया। आपकी विद्वता को विदेशों में समुचित मान मिला और आपको 1993 में न्यूयार्क, शिकागो तथा लंदन में स्वामी विवेकानंद के शिकागो संबोधन के शताब्दी समारोहों के लिए आमंत्रित किया गया है। आपको वर्ष 2000 में, कोर्ट ऑव जवाहर लाल नेहरू युनिवर्सिटी, नई दिल्ली का सदस्य भी नियुक्त किया गया था।

6. आपको अनेक पुरस्कार एवं सम्मान प्राप्त हुए हैं। आपको वर्ष 1997 में, कोलकाता में हनुमान प्रसाद, पोद्दार पुरस्कार तथा वर्ष 2002 में माता अमृतानंदमयी मात द्वारा अमृता कीर्ति पुरस्कार से सम्मानित किया गया। वर्ष 2004 में, भारत के राष्ट्रपति द्वारा पद्मश्री से विभूषित किया गया। आपको हिंदू नवजागरण पुरस्कार "हिंदू ऑव द ईयर, 2010" से भी पुरस्कृत किया गया।